प्रातः क्लास 13/1/69 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। अभी रूहानी बच्चे यह तो जानते हैं कि नई दुनियाँ में सुख है, पुरानी दुनियाँ में दुःख है। दुःख में सभी दुःख आ जाते हैं और सुख में सभी सुख आ जाते हैं। सुख की दुनियाँ में दुःख का नाम–निशान नहीं। फिर जहाँ दुःख है वहाँ सुख का नाम–निशान नहीं। जहाँ पाप है वहाँ पुण्य का नाम नहीं। जहाँ पुण्य है वहाँ पाप का नाम–निशान नहीं। वह कौन–सी जगह है, एक है सतयुग और दूसरा है कलियुग। यह तो जरूर बच्चों की बुद्धि में होगा ही। अभी दुःख का समय पूरा होता है और सतयुग के लिये तैयारी हो रही है। यह तो जरूर सभी की बुद्धि में होगा नम्बरवार। हम अभी इस कलियुगी छी छी दुनियाँ से उस पार सतयुग अथवा रामराज्य में जा रहे हैं। सतयुग में है सुख। कलियुग में है दुःख। नई दुनियाँ और पुरानी दुनियाँ कहा जाता है। ऐसे नहीं जो सुख देता है वही दुःख देता है। नहीं। सुख बाप देते हैं, दुःख माया रावण देती है। उस दुश्मन का एक ही चित्र है जो हर वर्ष उनकी एफीजी बनाकर जलाते हैं। एफीजी दुःख देने वाले का ही हमेशा बनाया जाता है। बच्चे जानते हैं जब उनका राज्य पूरा होता है तो फिर हमेशा के लिये खलास हो जाता है। तुम बच्चे जानते हो हमारे द्वारा ही रावण अर्थात् दुःख का विनाश हो जावेगा। दुःख देने वाले यह 5 विकारों वाला रावण है। तुम यहाँ बैठते हो तो भी बुद्धि में यही याद रहे हम अपने बाबा के पास जावें। रावण को तो बाप नहीं कहते। कब सुना है? रावण को परमपिता परमात्मा कहते होंगे? कभी भी नहीं। हाँ इतनी छोटी बुद्धि है तो समझते हैं लंका में रावण था। तुम बच्चों को तो समझाया जाता है यह सारी दुनियाँ लंका है। कहते हैं वासको दि गामा ने चक्र लगाया है स्टीमर वा बोट के रास्ते। जिस समय उसने चक्र लगाया है तो उस समय यह स्टीम्बर्स आदि नहीं थे। ट्रेन स्टीम पर चलती है। बिजली अलग चीज़ है। बच्चों को यह तो अच्छी रीत बुद्धि में है नई दुनियाँ को सुखधाम, पुरानी दुनियाँ को दुःखधाम कहा जाता है। नई दुनियाँ और पुरानी दुनियाँ का बदलना कैसे होता है। यह भी तुम जानते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझते हैं। कोई तो बहुत थोड़ा समझते हैं। इतना थोड़ा समझते हैं जो कभी याद भी नहीं करते हैं। है तो एक सेकण्ड की बात। कलियुग पुरानी दुनियाँ। सतयुग है नई दुनियाँ। अब नई दुनियाँ स्थापना हो रही है। पुरानी दुनियाँ खत्म हो जावेगी। पहले नई दुनियाँ स्थापन होती है फिर पुरानी दुनियाँ खत्म हो जावेगी। अक्षरों में कब नीचे ऊपर नहीं कहना चाहिए। पहले स्थापना, फिर विनाश पीछे पालना। पहले विनाश कहना रॉंग हो जाता है। पहले स्थापना फिर विनाश। पालना। यह एकदम पक्का कर दो। बहुत बच्चियाँ हैं जो तोते मिसल याद कर लेती हैं। राइट है वा रॉंग वह समझती नहीं हैं। रॉंग को राइट करना यही समझ है। अक्षर भी अर्थ सहित कहना चाहिए। पहले स्थापना, फिर विनाश, फिर पालना तो करते रहते हैं आधा कल्प तक। फिर पीछे होती है रावण की पालना। वह झूठी विकारी पालना कही जाती है। यह अच्छी रीत बुद्धि में धारण होना चाहिए। यह तो तुम बच्चे जानते हो बाप कब किसको दुःख नहीं देते हैं। यहाँ तो तमोप्रधान मनुष्य बाप को सर्वव्यापी कह देते हैं। सबसे थर्डक्लास प्वाइंट हो जाती है। यह तो बच्चों को चलते–फिरते बुद्धि में रहना चाहिए। है तो बहुत सहज। अलफ की बात है। मुसलमान लोग भी कहते हैं उठकर अल्ला को याद करो। "उथी अल्ला खे याद करियो, आहे न हिये वेल सुमन जी" खुद भी सबेरे उठते हैं। वह कहते हैं अल्ला वा खुदा को याद करो। तुम कहेंगे बाप को याद करो। बाबा अक्षर बहुत मीठा है। अल्ला कहने से वरसा याद नहीं आवेगा। बाबा कहने से वरसा जरूर याद आवेगा। मुसलमान लोग बाप नहीं कहते हैं। वह फिर अल्ला मियाँ कहते हैं। मियाँ बीबी। सभी से अच्छा अक्षर भारत में है। परमपिता परमात्मा। पिता कहने से ही शिवलिंग याद आवेगा। यूरोपियन लोग गॉड फादर कहते हैं। तो भी कहेंगे ठिक्कर–भित्तर में हैं। उनको भी यह पत्थर ही याद आवेगा या शायद पत्थर याद न आता हो। यहाँ तो सभी को (शिवलिंग) ही याद आता है। समझते हैं इस पत्थर में भगवान है। पत्थर भगवान करके पूजा जाता है। अभी वह पत्थर असल कहाँ से आता है जिसको लिंग कहा जाता है। ऊपर पहाड़ों से पत्थर बहकर आते हैं, तो पानी में घिसते–2 गोल हो जाता है। घिसकर बहुत लस्सी हो जाते हैं। उनमें सोने की भी जड़ी2 नेचरल निशान होते

हैं। अभी तुम समझ गये हो भगवान कोई पत्थर तो नहीं है। उनकी यह प्रतिमा बना दी है। जैसे देवी–देवताएँ पास्ट में होकर गये हैं। फिर बाद में पत्थर की मूर्ति बनाई जाती है। पत्थर का चित्र बनाकर उनको कहा जाता है ल0 और ना0। इस समय तो है ही भक्ति मार्ग। अभी तुम यह चैतन्य बनने लिये पुरूषार्थ कर रहे हो। तुम समझते हो हम कोई ऐसे पत्थर के नहीं बनेंगे। चैतन्य बनेंगे। यह भी चैतन्य था। पूजा के लिये पत्थर का बनाया है। चैतन्य होंगे तो पूजा नहीं होगी। जब पत्थर के बनते हैं तो उनकी पूजा की जाती है। चैतन्य तो पूज्य है। जब जड़ होते हैं तो पूजा के लायक हो जाते हैं। वह है पूज्य। वहां पुजारी होते ही नहीं। किसकी भी पूजा करते ही नहीं। वहाँ तो पत्थरों के चित्र बनाने की दरकार ही नहीं। यह सभी बनते ही हैं भक्तिमार्ग में। जो चैतन्य थे उनकी फिर निशानी पत्थरों की बनाकर रखते हैं। यह चैतन्य बनते हैं तो जड़ चित्र आदि सभी खलास हो जाते हैं। तुम पूज्य बन जाते हो। जब पूज्य फिर पूजा के लायक बनते हैं तो पत्थर के बनाते हैं। पूज्य है तो 5 तत्वों का शरीर है। वही चैतन्य फिर जड़ बन जाते हैं। फर्क पड़ता है ना। अभी इन देवताओं के जीवन कहानी का तुमको मालूम पड़ गया है। आगे यह ज्ञान की चक्षु नहीं थे। अभी तुम बच्चों को तो बहुत ज्ञान मिला हुआ है। उठाने वाले नम्बरवार हैं। ज्ञान तो सभी को वही मिलता है रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का। यह बातें सिवाय तुम्हारे और कोई की बुद्धि में नहीं होगी। तुम्हारे में भी नम्बरवार। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार ही तुम्हारी रूद्रमाला भी बनती है। रूण्ड माला भी बनती है बच्चों को समझाया है यह सारी माला है। एक रूण्ड माला है। एक है रूण्ड माला दूसरी है रूद्र माला। वह सभी हैं ब्रदर्स। वह फिर ब्रदर्स–सिस्टर्स हैं। यह तो बुद्धि में आता है ना हम आत्माएँ बहुत छोटी2 हैं। एकदम बिन्दी है। गायन भी है भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। अभी तुम समझते हो हम तो चैतन्य में हैं। हम आत्मा बहुत छोटा सितारा हैं। फिर इन में आते हैं तो पहले छोटा पिन्ड होता है। फिर कितना बड़ा हो जाता है। यह भी पार्ट बजाते रहते हैं। तुम कहेंगे हमारी आत्मा बिल्कुल छोटी बिन्दी मिसल है। वही इतना सारा पार्ट बजाती है। इस बड़े शरीर से। यह बड़ा होने कारण मनुष्यों को शरीर ही जास्ती याद आता है। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्मअभिमानी बनो। अपन को आत्मा समझो। यह सिर्फ़ इस समय एक ही बार तुमको ज्ञान मिलता है। क्योंकि तुम जानते हो अभी आत्मा पतित बन बड़ी है। पतित होने कारण जो भी काम करते हैं वह सभी उल्टा। बाप सुल्टा काम कराते हैं। रावण उल्टा कराती है। बाप ने समझाया है उल्टा और सुल्टा कौन सा काम कराती है। परमात्मा सर्वव्यापी कहना यह है सबसे उल्टा काम। इसलिये उल्टा काम कराने वाले को हर वर्ष जलाते ही रहते हैं। आखरीन तो जल ही जावेगा। यह कोई अविनाशी चीज़ तो नहीं है। यह तो विनाशी है ना। आत्मा जो पार्ट बजाती है वह है अविनाशी। उनको कब जलाया नहीं जाता। उनकी पूजा की जाती है बाकी मनुष्य शरीर को जलाया जाता है। आत्मा जलाने की वस्तु नहीं है। आत्मा तो पहले से ही एक तन से निकल दूसरे में जाकर प्रवेश करती है। पीछे शरीर को ले जाते हैं। आत्मा सेकण्ड में जाकर दूसरा शरीर लेती है। शरीर को दो/चार दिन रख भी देते हैं। आत्मा तो चली जाती है। क्रिश्चियन का एक सेन्ट जेवीयर है, कहते हैं उनका शरीर अभी तक रखा हुआ है। उनका भी जैसे एक मंदिर बन रहा है। दवाइयों आदि में ढका हुआ रखा है। किसको दिखाते नहीं हैं। सिर्फ़ उनके पाँव दिखाते हैं। उनको छूते हैं। कोई बीमार आदि होते हैं तो उनके पाँव छूने से हल्के हो जाते हैं। तो समझते हैं उनकी कृपा। बाप कहते हैं ना भावना का भाड़ा मिलता है। निश्चय बुद्धि होने से कुछ न कुछ फायदा हो जाता है। बाकी ऐसे अगर हो तो ढेर के ढेर वहाँ जायें। बाप यहाँ आये तो भी इतना ढेर नहीं हो सकते। ढेर होने की जगह ही नहीं होती। ढेर होने का जब समय आता है तो विनाश हो जाता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। जो चला आता है। इनकी आदि वा अन्त नहीं है। हाँ, झाड़ की जड़जड़ी भूत अवस्था होती है अर्थात् तमोप्रधान बन जाता है तब यह झाड़ चेंज होता है। कितना यह बड़ा बेहद का झाड़ है। अभी चेंज होना है। पहले वह आवेंगे जिनको पहले नम्बर में जाना है। नम्बरवार आवेंगे ना। सभी सूर्यवंशी इकट्ठे तो नहीं आवेंगे।

चन्द्रवंशी भी सभी इकट्ठे नहीं आते। माला बनती है वह भी नम्बरवार। अभी आने वाले हैं। सभी तो नहीं आये हुये हैं। सभी इकट्ठे नहीं आते। पार्टधारी आहिस्ते2 आते हैं। वह कितनी छोटी स्टेज यह कितनी बड़ी स्टेज है। नम्बरवार अपने पार्ट अनुसार आते रहते हैं। यह अच्छी तरह धारण करना है इस दुनियाँ पर हम खिलाड़ी हैं। पार्ट बजाने आते हैं नम्बरवार। यह बड़ा एक्युरेट ड्रामा बना हुआ है। इसमें कोई चेंज नहीं हो सकती। इनएक्युरेट कह नहीं सकते हैं। मीठे2 बच्चे जब यहाँ बैठते हो तो बुद्धि में यही याद रहना चाहिए, और सतसंगों में तो और2 अनेक बातें बुद्धि में आती रहती हैं। शास्त्रों आदि में कितने ढेर बातें हैं। यह तो एक ही पढ़ाई है जिससे तुम्हारी कमाई होती है। उन शास्त्रों आदि पढ़ने से कमाई नहीं होती। हाँ, कुछ न कुछ गुण अच्छे होते हैं। ग्रन्थ पढ़ने पर बैठते हैं तो ऐसे भी नहीं सभी निर्विकारी होते हैं। पैदा तो सभी भ्रष्टाचार से ही होते हैं। फिर उनमें कोई अच्छे कोई बुरे होते हैं। कोई अच्छे कोई बहुत विकारी होते हैं। सन्यासियों में भी ऐसे होते हैं। शेर वाला सन्यासी था। पहले सन्यासी था फिर गृहस्थी बना। कुमारियाँ आदि बहुत जाती थीं। आखरीन शादी कर ली, फिर बच्चे भी हुये। दूसरे कोई से बच्चा हो जाये तो नाम बदनाम हो जाये। सन्यासी का तो और भी नाम बदनाम हो जाये। इस समय विचार किया जाता है सभी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। तुम बच्चों से पूछते हैं वहाँ जन्म कैसे होगा? बोलो, वहाँ तो 5 विकार होते ही नहीं। वहाँ है ही योगबल। योगबल से सारे विश्व को पवित्र बना सकते हो, योगबल से तुम विश्व के मालिक बन सकते हो तो बच्चे क्यों नहीं होंगे! वह पहले ही साक्षात्कार होता है कि बच्चा आने वाला है। नंगन होने की बात ही नहीं रहती। नंगन होने वाले को तो दुःशासन द्रौपदी कहा जाता है। इस समय दोनों पुकारते हैं। वह कहते हैं बाबा यह दुःशासन हमको नंगन करते हैं, वह कहते हैं बाबा द्रौपदी हमको नंगन करती है। ऐसे भी ढेर केस हैं। दोनों रिपोर्ट करते हैं। इस समय ही पुकारते हैं; क्योंकि संगमयुग है। सभी तो पवित्र नहीं बनते हैं। बाबा ने समझाया है, बाबा सिर्फ़ डराते नहीं हैं। एक्युरेट बात सुनाते हैं। अच्छे में अच्छे बच्चे उनको भी माया एकदम गिरा देती है। अच्छे ते अच्छे कहो वा अच्छी ते अच्छी कहो। माया गिराने में देरी नहीं करती है। बाप भी उसी समय आकर कहते हैं। बाप को सुनाते भी हैं। अगर सुनावेंगे नहीं तो पाप सौ गुणा हो जावेंगे। इसलिये जो कुछ अन्दर में है, आत्मा की बुद्धि में है ना। तो बाप कहते हैं बच्चे जो भी पाप कर्म किये हुये हो मुझे बता दो; क्योंकि मैं अविनाशी वैद हूँ। सर्जन को सुनाने से तुम हल्के हो जावेंगे। बाकी जन्म–जन्मान्तर की बात तो कोई जानते ही नहीं। अन्त तक बाप को ही याद करते रहो। तो पाप कट जावेंगे। जो सच्च बतलाते हैं और पुरूषार्थ करते हैं तो लॉटरी भी विन करते हैं। सारा मदार पुरूषार्थ पर है। यह बूढ़ा भी पुरूषार्थ करता है ना। यह भी तो पतित था ना। सारी आयु 60 वर्ष तक पतित रहा। तो यह सभी बातें तुमको बाप समझाते हैं रिफ्रेश करने लिये। स्कूल में अगर आवेंगे नहीं तो कैरेक्टर्स कैसे सुधरेंगे। भारत का इस समय खराब कैरेक्टर्स है ना। विकार ही पहले नम्बर का खराब कैरेक्टर्स है। इसलिये बाप कहते हैं बच्चों, काम विकार महाशत्रु है। आगे भी यह गीता का ज्ञान सुना था जो बाप ने संगमयुग पर दिया था। जबकि एटॉमिक बॉम्स की लड़ाई भी लगी थी। लड़ाई कब लगी थी यह कोई भी नहीं जानते। बाप सारा हिसाब बताते हैं। हर 5000 वर्ष बाद लड़ाई लगती है। झाड़ भी पुराना हो जाता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सुनाते भी हैं। सभी तो नहीं सुनाते हैं। बाकी बाप तो सभी को इकट्ठा ही समझाते हैं। फिर हरेक की बुद्धि अपनी है। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई में करके टीचर अलग भी पढ़ाते हैं। यहाँ तो वह बात नहीं। बाबा को लिखते हैं कृपा करो, आशीर्वाद करो। बाबा लिख देते हैं आशीर्वाद अपने ऊपर आपे ही करो पुरूषार्थ से। अपन को तिलक लगाना है पुरूषार्थ से। आशीर्वाद की तो बात ही नहीं। इसमें मुख्य है याद की यात्रा और दैवीगुण। बहुतों को आप समान बनाओ तो राजा महाराजा बन जावेंगे। राजा महाराजा यह कब से शुरू हुआ। तुम समझते हो बाप ने आकर इस पढ़ाई से यह वरसा दिया है। तुमको पढ़ाई से यह वरसा मिलता है, जो फिर चला आता है। पीछे फिर जब द्वापर शुरू होता है तो बहुत दान, पुण्य आदि .....,

हैं, अच्छे कर्म करने से राजाई मिलती है वह धन मिलता है। राजा महाराजा का टाइटिल भी खरीद करते हैं। कोई बहुत धनवान हैं, 10/20 लाख गवर्मेन्ट को मदद करे तो उनको टाइटिल मिल सकता है। यह है रावण की दुनियाँ और वह है राम की दुनियाँ। चक्र कैसे लगाते हैं। हरेक अपने पूरा टाइम पर पार्ट बजाते रहते हैं। अन्दर में टीचर थोड़े ही सोचेगा हम बच्चों को, सन्तान को पढ़ा रहे हैं। यह रूहानी बाप ही समझते हैं। हम अपनी रूहानी बच्चों को पढ़ाते हैं। संस्कार ले जाते हैं फिर आना है। थोड़ा टाइम ठहरना है। जिसको रेस्ट कहा जाता है। तब तक यहाँ रूहानी बच्चे भी हैं, जिस्मानी बच्चे भी हैं। थोड़ा रेस्ट लेते हैं। एडवान्स में भी अच्छे2 महारथी जाते हैं। घोड़ेसवार भी जाते हैं। प्यादे भी जाते हैं। टाइम तो पड़ा है ना। छोटी सी आत्मा में थोड़ी पूछरी रिकार्ड की है। 5000 वर्ष का रिकॉर्ड है। कोई की बुद्धि में यह होगा, तुम्हारी बुद्धि से भी थिरक जाता है। अगर पूरी धारणा होती तो बुद्धि में चक्र फिरना चाहिए ना। नहीं फिरता है तो सिद्ध होता है देरी से आने वाले हैं। जो भी धारणा नहीं करते हैं वह देरी से आवेंगे। कोई तो अच्छी रीति पढ़ते रहते हैं। कोई कोई समय ऐसी गुह्य बातें निकलती हैं जो संशय ही उड़ जाता है। इसलिये पढ़ाई को कब मिस न करना चाहिए। ऐसे नहीं बाबा रोज2 एक ही जैसी बातें सुनाते हैं। मुख्य है बाप को याद करना। दैवी गुण धारण करना है। कोई कुछ छी छी बोले तो सुना अनसुना कर देना चाहिए। हियर नो ईविल।..... मान–अपमान, दुःख–सुख यह सहन करना है। सहन करने की युक्ति भी बता देते हैं। कुछ भी कहे तो सुना अनसुना करना है। वह भी अवस्था चाहिए। थोड़ा कुछ सुनते हैं तो झट ख्याल आ जाता है। तुमको तो कहा गया है सारी दुनियाँ को भूल जाओ। अपन को आत्मा समझो। आत्मा कानों बिगर कैसे सुनेगी। अशरीरी हो जाओ। जैसे रात को आत्मा अशरीरी हो जाती है। सो जाती है कोई गला काट कर जाते हैं पता नहीं पड़ता। अपन को आत्मा समझना है। आत्मा शरीर द्वारा कर्म कर थक जाती है। अशरीरी हो जाती है जिसको ही नींद कहा जाता है। अगर आत्मा को कोई बाहर आदि का ख्याल है तो नींद भी फिट जाती है। अशरीरी हो नहीं सकती है। खयालात चलती है ना। बाप समझाते रहते हैं जब तक अशरीरी बने नहीं हो तब तक कुछ न कुछ माया की चोट लगती ही रहेगी। थोड़ा दुःख होगा। पक्के हो जावेंगे तो फिर बाप ने युक्ति बताई सुना अनसुना कर दो। हियर नो ईविल.....। यह हमेशा बन्दर को दिखाते हैं। शास्त्रों में भी बन्दर सेना दिखाई है। वास्तव में बन्दर सेना तो होती ही नहीं। मनुष्य (इस) समय जैसे हूबहू बन्दर मिसल हैं। बन्दर सभी से चंचल होता है ना। बन्दर और मनुष्य की सिकल में थोड़ा फर्क है। वह जैसे जानवर देखने में आता है। अभी बच्चे दिल अन्दर समझते हैं हम बन्दर से भी बदतर हैं। हम अभी फिर बनते हैं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

प्वाइंट्स :– बच्चे जानते हैं सतयुग में दुःख का नाम–निशान नहीं होता। है ही सुख की दुनियाँ। बाकी सतयुग से त्रेता में कम जरूर है। फिर द्वापर से दुःख की वृद्धि होती है। कलियुग में और जास्ती वृद्धि होती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती है ना। इनको तुम बच्चे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हो और समझा सकते हो। बुद्धि में धारणा होगी ही नहीं तो दान दे न सकेंगे। कोई सर्विस नहीं करते हैं तो कोई काम के नहीं अभी तुम समझते हो नम्बरवार ही पढ़ते हैं, नम्बरवार ही आत्माएँ आती हैं। ईश्वरीय कायदे भी अभी ड्रामा में रखे हुये हैं। यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। यह भी अभी बाप आकर समझाते हैं। तुम तो कुछ भी नहीं जानते थे। बन्दरबुद्धि थे। जैसे बाप के लिये वराह अवतार, शुकर अवतार कहते थे तो तुम्हारी भी बुद्धि ऐसी थी। सतयुग में तो ऐसे नाम होते ही नहीं। वहां तो है गार्डेन ऑफ फ्लावर्स। यहां तो जितना ऊँच आदमी उतना ही बड़े काँटे। तुम्हारा नाम कितना अच्छा है। स्वदर्शनचक्रधारी। अगर ज्ञान है चलन न सुधरती है तो उसको क्या कहेंगे। पढ़ाई में गुड, चलन में क्या लिखेंगे। चलन का भी टीचर को पढ़ाई से मालूम पड़ता है। ओम। बाप दादा, कहे यह स्लोगन हर एक याद कर लेवे" पर–चिन्तन पतन की जड़ है और उत्तम चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है।"